भारत बन्द के विरोधियों के जवाब में

यह लेख जनसत्ता में 5 मार्च 2013 को लिखे साहित्यकार गिरिराज किशोर के लेख 'क्या विरोध का ढंग बदल सकता है, के प्रत्युन्तर में है। वैसे तो उनके विचार इतने उलझे हुये और अन्तर्विरोधी हैं कि उनका उत्तर देने की जरूरत नहीं थी लेकिन पूरे लेख में शरमाते सकुचाते हुये अन्त में नंगे होकर वो जिस तरह से 'फिक्की' या एसेचेम के एजेन्ट की तरह मज़दूर विरोधी सुझाव देते हैं उसने यह जवाब देने पर मजबूर किया है।

लेख को पढ़कर लगता है कि जैसे श्री कृष्ण ने अपना शरीर यानि अपनी सेना तो कौरवों के पास भेज दी और अपनी आत्मा यानी स्वयं पांडवों की तरफ से लड़े, उसी तरह गिरिराज जी की आत्मा तो पूजीपतियों व मालिकों की तरफ है लेकिन अपनी लेखनी से वे कुछ मज़दूरों के दुखों का रोना रोते दिखायी देते हैं।

लेख की शुरूआत वह मज़दूरों को उनके महाबन्द की सफलता पर बधाई देकर करते हैं तो उसका अन्त वह उनको डराकर करते हैं कि इसके बाद ''उन्हें बदतर जीवन जीने के लिये मजबूर होना पड़ता है।'' वह खुद ही मानते हैं कि ''आन्दोलनों के कारण ही मज़दूरी में निरन्तर वृद्धि होती गई।'' और खुद ही यह भी कहते हैं कि इससे ''असंगठित मज़दूर का कितना लाभ हो पाता है कहना आसान नहीं।'' जबकि वह स्वयं मानते हैं कि असंगठित मज़दूरों की मज़दूरी का भी मानकी करण हो गया यानी कि उनके लिये भी न्यूनतम मज़दूरी तय की गई। यह सभी जानते हैं कि आन्दोलन हमेशा संगठित मज़दूरों ने ही किया व उसका लाभ सभी मज़दूरों को मिला।

गिरिराज किशोर ने बन्द में नोयडा में हुई हिंसा की तुलना हैदराबाद के बम धमाकों से की है जो किसी तरह से भी उचित नहीं है। बम धमाके निहत्थे और असहाय, निरपराध लोगों पर कायरों द्वारा की गयी छुपी कार्रवाई है जबकि बन्द उन बहादुर मज़दूरों का उन पूंजीपतियों व मालिकों के ख़िलाफ खुलकर संघर्ष का एलान है जो बार बार दी गयी चेतावनियों के बावजूद मज़दूरों को उनका हक नहीं दे रहे हैं। बन्द के मज़दूर शहीद भगत सिंह की जमातों से हैं तो बम धमाके वाले अजमल कसाब और प्रज्ञा ठाकुर जैसों के। दोनों की तुलना नहीं की जा सकती। बन्द में हुई हिंसा के लिये सिर्फ मज़दूरों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। बन्द को असफल करने के लिये अपनी फैक्टरी खोलने वाले मालिक भी उतने ही दोषी हैं। हालांकि बन्द आमतौर पर शान्तिपूर्वक था और नोएडा की घटनायें सिर्फ अपवाद ही है। उसके लिये आयोजकों ने खेद भी जताया है।

दूसरा तर्क जो आमतौर पर हर पूंजीपति द्वारा बन्द के विरोध में दिया जाता है और गिरिराज ने भी दिया है वह है इससे उत्पादन में देश को होने वाले नुकसान का, आगजनी व हिंसा में सम्पत्ति के नुकसान का व आम आदमी को होने वाली असुविधा का। गिरिराज तो बन्द से हुये सम्पत्ति व उत्पादन के नुकसान को राजनीतिक घोटालों के समकक्ष ही ठहराते हैं। पिछले एक साल में ही उजागर हुये घोटालों से देश को लाखों करोड़ रुपया का नुकसान हुआ है जबकि बन्द से सिर्फ 26 हजार करोड़ रुपया का। और ये ध्यान रहे कि ये घोटालें उन राजनेताओं व पूंजीपतियों द्वारा ही किये जाते हैं जो सबसे ज्यादा मज़दूरों के बन्द के विरोध में है। बेचारे मज़दूर तो खुद उनके शिकार हैं व उनके विरोध में आवाज बुलन्द करते हैं। इसलिये गिरिराज जी पीड़ितों को नसीहत देने के बजाय घोटालेबाजों पर लगाम कसने के कुछ उपाय बताते तो ज्यादा अच्छा गिरिराज जी बार-बार

सलाह देते हैं कि मज़दूरों को देश के आर्थिक हालात व संसाधनों को देख कर ही अपनी मांगे उठानी चाहिए। यानी जब देश की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है तो उन्हें कुछ नहीं मांगना चाहिए।

हड़ताल या बन्द नहीं करना चाहिये। जिस देश में एक लाख पचहत्तर हजार करोड़ रुपया का टू जी घोटाले हो, डेढ लाख करोड़ रुपया का कोयला घोटाला हो, जहां बैंक पूंजीपतियों को एक लाख करोड़ रुपया का ऋण देकर वसूल नहीं हो सकता बता देते हों जहां अम्बार्न की सम्पत्ति चालीस साल में साठ लाख से साठ हजार करोड़ रुपया हो जाती हो, क्या वो देश ग़रीब है ? या सिर्फ मज़दूरों को देने के नाम पर ही इसकी नानी मरती है। हर साल वित्तमंत्री बैट कस्टम ड्यूटी और एक्साईड में हजार करोड़ रुपया की छूट दे रहे हैं लेकिन मज़दूरों को देने के लिये उनके पास सिर्फ उपदेश हैं त्याग करना सिर्फ मज़दूरों की जिम्मेवारी है और शासकों और पैसे वालों की ऐसा करना और नित नये नियमों और कानूनों से अपना घर भरना ये बात भी कही आपने गिरिराज जी कि अब पुराने विरोध के तरीकों से काम नहीं चलेगा। क्योंकि सत्याग्रह और शांतिपूर्वक धरनों से सरकार और पूंजीपतियों के कानों पर अब जूं तक नहीं रेंगती।

ये बेशरम लोग धरने पर से उठनेवाली आवाजों की तरफ से पूरी तरह से बहरे हो चुके हैं। इनके कान खोलने के लिये मज़दूरों को निश्चित रूप से अपनी आवाज और बुलन्द करनी होगी। और अन्त में गिरिराज जी ये बता दे कि मज़दूर आन्दोलन में आम आदमी को समिधा की तरह नहीं इस्तेमाल किया जाता बल्कि मज़दूर खुद एक आदमी है। वह आन्दोलन के दिनों के थोड़े से कष्टों के आगे होने वाले लाभों को देखते हुये सहर्ष सहन करता है।

'बन्द में, व हड़ताल से आम आदमी को तकलीफ़ होती है' ऐसा हव्वा सरकार व पैसे वालों द्वारा इसलिये खड़ा किया जाता है ताकि ग़रीब जनता में फूट डालकर उन्हें एक दूसरे के विरूद्ध खड़ा किया जा सके। वरना इससे ज़्यादा तकलीफ़ तो आम जनता को तब होती है जब आप जी चाहे तब वी.आई पी. सुरक्षा के नाम पर सड़के बन्द कर देते हों और जनता के लिये बनी पुलिस और फौज को अपनी सेवा में लगा देते हो।

और गिरिराज जी इस ख्याम ख्याली में मत रहियेगा कि परिसर के अन्दर सत्याग्रह करके व उत्पादन बढ़ाकर फैक्टरी मालिकों से अपनी मांगे मनवायी जा सकती हैं। आपका वास्ता अभी शायद हमारी पुलिस, श्रम विभाग और पी.एफ, ई.एस. आई आदि से नहीं पड़ा है

मज़दूरों की कमर तोड़ने के लिये सरकार ने ये महकमे खड़े करके मालिकों को दिये हैं। गुड़गाव में पशुपति एक्रीलोन के मज़दूरों पर गोली व हीरो होण्डा के शान्तिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे मज़दूरों की पुलिस द्वारा पिटाई अभी हम भूले नहीं है। मारुति का कहर तो अभी ताजा ही है जहां मालिकों ने पहले तो लगातार मज़दूरों को शान्तिपूर्ण आन्दोलन की उपेक्षा करके उन्हें उग्र कदम उठाने को उकसाया और फिर हरियाणा सरकार का भरपूर उपयोग करते हुये उनकी कमर तोड़ रही है। मारुति ने हज़ारों करोड़ रुपया का नुकसान उठाना मंजूर किया लेकिन मजदूरों की मांगो पर कुछ करोड़ खर्च करना नहीं।

-अजातशत्रु

हर साल वार्षिक उत्सव व अकूत मुनाफा एवं शोषण

मदरसन सिस्टमस लिमिटेड दिल्ली एनसीआर के फ़रीदाबाद, गुडगांव व नोयडा में स्थित हैं। ये कम्पनी बाइक व कार के लिये वारिंग हार्नेस व तरह-तरह के आटो उत्पादन तैयार करती हैं। मारुति-सुजुकी, हीरो होण्डा, टाटा, टोयटा, टोमसा, यामाहा आदि के लिये उत्पाद तैयार करती हैं। मदरसन की फ़रीदाबाद, गुडगांव में एक-एक नोयडा में चार बड़ी कम्पनियां हैं।

हर साल यह कम्पनी वार्षिक उत्सव कराती है जो दिसम्बर के अंत में ग्रेटर नोएडा में होता है। इस कम्पनी में जापानी पूंजीपतियों के भी शेयर हैं। जापानी मालिक, मदरसन का मालिक चांद सहगल व मैनेजमेण्ट एवं मज़दूर सब मिलाकर करीब 10 हजार लोग इस उत्सव में होते हैं। कार्यक्रम की शुरूआत कम्पनी मालिक के स्वर्गीय माता-पिता की बड़ी तस्वीर (जो पहले मालिक थे) के सामने भव्य प्रार्थना गीत, फूल वर्षा जो कम्पनी में काम करने वाली लड़कियां करती हैं, से होती है। इसके बाद कम्पनी की तरक्की, उत्पादन में गुणवत्ता, ग्राहक सन्तुष्टि आदि के बारे में बताया जाता है। बीच-बीच में लड़के-लड़कियों का डांस कराकर मनोरंजन कराया जाता है। डांस के दौरान सीटी व तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा हॉल गूंज जाता है। संचालन करने वाले जैसे टी वी रियल्टी शो में होते हैं, वैसे होते हैं। ये कहते हैं कि मदरसन परिवार के बच्चे मेहनत बहुत करते हैं। डांस-गाने भी अच्छे करते हैं इस तरह मज़दूरों को खुश किया जाता है। अंत में मालिक चांद सहगल का भाषण होता है। जो कहते हैं कि आज महा मदरसन परिवार को देखकर दिल गद्गद् हो गया है। कहते हैं 'आप लोग खुब मेहनत करो, आगे बढ़ोगे'। जापानी मालिक का भाषण भी हिंदी में होता है। एक जापानी को हिन्दी बोलते देखकर मज़दूर तालियां बजाते हैं। प्रतियोगिता व डांस अदि का मज़दूरों को इनाम दिया जाता है। ड्यूटी व उत्पाद के बढ़ाने में ज़्यादा से ज़्यादा योगदान देने वालों को भी इनाम दिया जाता है। इस तरह हर साल वार्षिक उत्सव कराकर मज़दूरों के दिमागों में भर दिया जाता है कि तुम लोग मेहनत से काम करोगे तो तुम लोग भी आगे बढ़ सकते हो। सभी मज़दूर मदरसन परिवार के हैं। काम की प्रतियोगिता, सुझाव पत्र, ज़्यादा प्रोडक्सन देने में मन लगाओ कि कम्पनी का नाम विश्व में प्रसिद्ध हो। आप लोगों को काम बराबर मिलता रहेगा। इस तरह मज़दूरों के साल वार्षिक उत्सव कराया जाता है। अब मैं अकूत मुनाफा के तरीकों व शोषण के बारे में बता रहा हूं। मैं फ़रीदाबाद यूनिट में कार्यरत हूं जिसमें लगभग 1500 मज़दूर काम करते हैं। 700 लड़के, 800 लड़कियां जिनकी उम्र 18 से 35 वर्ष के बीच में हैं। इनमें से सिर्फ 70 मज़दूर स्थायी हैं। इस यूनिट को मदरसन सिस्टमस के नाम से जाना जाता है। मारुति सुजुकी हीरो होण्डा के लिए वारिंग हार्नेस तैयार करती है। सारे मज़दूर कम से कम दसवीं पास हैं। भर्ती के दौरान त्यागपत्र लिखवा लिया जाता है। नौ साल से लेकर 1 साल तक के मज़दूरों

छुट्टी व बीमार होने पर छुट्टी करने पर दूसरे दिन डांट-फटकार सुननी पड़ती है। कोई मज़दूर जबाव सवाल करता है तो तुरंत उससे कार्ड छीनकर गेट से बाहर कर दिया जाता है। तम्बाकू, गुटखा खाते हुए पकड़े जाने पर काम से निकाल दिया जाता है। पांच साल तक वाले मज़दूर भी काम कर रहे हैं, उनको अभी तक परमानेन्ट नहीं किया गया है।

को नौकरी से निकलना जारी रहता है। इसमें न्यूनतम वेतन व सामान्य बोनस मिलता है। कुछ श्रम कानून भी लागू होते हैं। वारिंग हार्नेस तैयार करने वाले मज़दूर तीन भागों में बंटे हैं। स्टोर, मशीन व एसेम्बली एरिया। स्टोर में मज़दूर गाड़ी पर लोड़ तार के बड़े कॉयल, कम्पोनेन्ट के डब्बे उतारने होते हैं जो काफी भारी होते हैं। उसके बाद स्टोर एरिया में लाकर सही जगह पर रखना जारी रहता है। ऊपर डांट-फटकार, गालियां तक मिलती रहती हैं। इसके अलावा मशीनों पर वायर देना व एसेम्बली एरिया में कम्पोनेन्ट देना होता है। मशीन पर काम करने वाले मज़दूर (लड़के-लड़कियां) वायर की कटिंग करते हैं। उसमें कम्पोनेन्ट आदि आटोमेटिक लग जाता है। उसके बाद उसे दूसरी जगह रखते हैं। इस प्रकार लगातार मशीन का तेजी से चलना व वायर कटिंग को उठा कर रखना पड़ता है। बाथरूम जाने व पानी पीने की फुरसत नहीं मिलती है प्रोडक्शन कम होने पर डांट-फटकार पड़ती है। कुछ मशीनें हाथों से (मैन्युअल) चलाया जाती है। जिसमें हर समय हाथ कटने का डर रहता है। प्रोडक्शन के दबाव में सेंसर बाईपास करके मशीन चलाना पड़ता है जिसमें अंगुली कट जाती है। ऐसी घटना होने पर निजी अस्पताल में इलाज कराकर काम से निकाल दिया जाता है। इस तरह मशीन एरिया में तीनों शिफ्ट में काम करना पड़ता है। एसेम्बली एरिया में दो शिफ्ट में काम होता है। उसमें दो तरह के बोर्ड होते हैं। फिक्स बोर्ड व कनवेयर बोर्ड। फिक्स बोर्ड पर डाइग्रम के अनुसार जिग लगे होते है उसमें वायर को माउंट (लगाना डाइग्राम के अनुसार) करना उसके बाद ब्रांच (शाखाएं) पर कम्पोनेन्ट लगाना उसके बाद टेपिंग करना (बिजली टेप) होता है। हाथें की स्पीड इतनी तेज होती है कि जाड़े में गर्मी लगने लगती है। इस तरह फिक्स बोर्ड पर वायरिंग हार्नेस तैयार होती है। पचास मीटर के लगभग की कनवेयर बोर्ड होती है। एसेम्बल किया हुआ वायर का बोर्ड पर माउंट करना होता है। कनवेयर घूमता रहता है। उसमें फिर टेपिंग करनी होती है। कनवेयर पर चलते हुए काम करना लगातार एक के बाद एक बोर्ड आता रहता है। क्रम जारी रहता है। सांस लेने की फुरसत नहीं होती है। डांट-फटकार पड़ने के कारण लड़कियां रोने लगती हैं।

मशीन एरिया से लेकर एसेम्बली एरिया तक श्रम विभाजन इतना गहन है कि पचासें तरह के काम करने होते हैं। काम कराने के लिये इंजीनियर, सुपरवाइजर तो होते ही हैं। इसी मज़दूर में से कोई टर्नर, लाझ लीडर तो कोई हेल्पिंग हेण्ड होते हैं। एक दूसरे को सिखाना, काम करना व देख-रेख करते हैं। शिप्ट शुरू होने से पहले 15 मिनट की मीटिंग ली जाती है। पिछले दिनों की गलतियों के बारे में बताया व डांटा जाता है। फिर लंच के बाद 15 मिनट की मीटिंग होती है। प्रोडक्सन व कोई गलती के लिये डांट-फटकार व लज्जित किया जाता है। यहां तक कि 8 घण्टे में कभी-कभी चार-पांच बार मीटिंग हो जाती है। इस तरह मीटिंग करके दिमाग में अपनी बातें भर देना ताकि दूसरा कुछ सोच नहीं सकते। छुट्टी व बीमार होने पर छुट्टी करने पर दूसरे दिन डांट-फटकार सुननी पड़ती है। कोई मज़दूर जबाव सवाल करता है तो तुरंत उससे कार्ड छीनकर गेट से बाहर कर दिया जाता है। तम्बाकू, गुटखा खाते हुए पकड़े जाने पर काम से निकाल दिया जाता है। पांच साल तक वाले मज़दूर भी काम कर रहे हैं, उनको अभी तक परमानेन्ट नहीं किया गया है। जब मर्जी काम से निकालना जारी रहता है। इस तरह अकूत शोषण करके भारत में फ़रीदाबाद, गुड़गांव, नोएडा, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड), लखनऊ, जमशेदपुर, चेन्नई, पुणे, गुजरात, बंगलौर आदि जगहों पर 50 कम्पनियां खोल दी गई हैं। विश्व में अमरीका, जापान, संयुक्त अरब अमीरात (शारजहां), आस्ट्रेलिया, श्री लंका आदि जगहों पर भी कम्पनी लगी है।

-एक मज़दूर, ओल्ड फ़रीदाबाद